REVELATION 21 SERIES, STUDIES #11 THRU #15, by Chris McCann-Hindi

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन **#11 - #15** क्रिस मॅकन – हिन्दी

Revelation 21 Series, Study #11 by Chris McCann, originally aired , June 8, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 11, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 8 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 11 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:5 को पढ़ने जा रहे हैं :

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

परमेश्वर उन वचनों के विषय में कह रहे हैं जो वे विशेष रूप में यूहन्ना से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखवा रहे थे, पर हम उनके इस कथन को केवल प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक ही सीमित नहीं रख सकते, यह सम्पूर्ण बाईबल पर लागू होता है और यह ''विश्वास के योग्य और सत्य'' है। परमेश्वर स्वयं विश्वास के योग्य और सत्य है इसलिये उनका वचन भी विश्वास के योग्य और सत्य होगा।

यह कुछ भिन्न बात है और यह ऐसा है जिसे हमने इस संसार में कहीं और नहीं पाया है। आप सोचकर बताइये संसार में कहीं कुछ ऐसा पाते है जो 'सत्य' है और जो 'विश्वास के योग्य' है। आपको कभी कोई व्यक्ति मिल सकता है जो कभी–कभी सच बोलता है। आप किसी व्यक्ति को पा सकते हैं जो विश्वासयोग्यता से काम पर जाता है और किसी काम को विश्वासयोग्यता से करता है। परन्तु परमेश्वर अपने वचन को सम्पूर्ण बाईबल (66 पुस्तकों) में देने के विषय में कह रहे है, और उनका प्रत्येक वचन सत्य है और हर एक वचन विश्वास करने के योग्य है। इस पुस्तक बाईबल में परमेश्वर ने बहुत सी भिन्न–भिन्न बातें कही है। उसने हमें अतीत की बातों के बारे में बताया है, उदाहरण के लिये उसने हमें बताया कि वह सनातन परमश्वेर है और यह ''विश्वास के योग्य और सत्य'' है। उन्होंने हमें बताया कि इस संसार का सृजन कैसे हुआ, और वह वृतान्त ''विश्वास के योग्य और सत्य'' है।

दूसरी ओर संसार हमें क्या बताता है कि संसार और विश्व कैसे अस्तिस्व में आये? वे एक विस्तृत कहानी बताते हैं जो मनुष्यों के मन की उपज है। यह किसी हास्यास्पद कहानी से कम नहीं जो आपने कभी सुनी हो। वे घटनाओं के बारे में बताते है कि अरबों–खरबों वर्ष

पहले घटी। निश्चय ही पिछले कुछ दशकों में इस कहानी में परिवर्तन आया है। पहले यह लाखों वर्ष पहले की बात थी, और फिर अरबों वर्ष पुरानी, और फिर अरबों–खरबों वर्ष पुरानी कही जाने लगी। वे बार–बार बदलते जाते है कि यह कितने वर्ष पहले हुआ और उन्हें लगता है कि यदि वे बहुत अधिक समय बतायेगे (जैसे अरबों–खरबों वर्ष) तो लोग उनसे प्रश्न ही नहीं पूछेंगे : ''वे तत्व कहाँ से आये जिन्होंने विस्फोट किया और विश्व को बनाया और जिनके आधार पर बाकी सभी बातों का उद्‌विकास हुआ?'' उनके पास कोई उत्तर नहीं है। आप सबसे अधिक बुद्धिमान वैज्ञानिक से भी पूछ सकते हैं, उनके पास भी इस मूल प्रश्न का उत्तर नहीं है। ''ओह, हम अभी उस बात पर शोध कर रहे है, हम बहुत परिश्रम के साथ अध्ययन करते आये है और एक न एक दिन यह जानकारी भी मिल जायेगी'' वे आपको उत्तर देंगे। परन्तु उन्हें कभी उत्तर नहीं मिलेगा क्योंकि इसका कोई उत्तर है ही नहीं। केवल एक ही उत्तर है कि एक अनंतकाल के अस्तित्व वाला पदार्थ था, और किसी प्रकार का 'तत्व' सदा से अस्तित्व में था। वे यह बात कहना नहीं चाहते, क्योंकि यह बात सनातन परमेश्वर के अस्तित्व को मानने के समान है जो सदाकाल से अस्तित्व में है। परन्तु यदि उद्‌विकास की अवधारणा सत्य है (जो कि सत्य नहीं है) तो उनके मतानुसार सभी बातों का उद्‌विकास या सृजन जिस भी वस्तु से हुआ, उसका भी आरम्भ होना चाहिये परन्तु उसका आरम्भ नहीं है।

परमेश्वर हमें वह सब कुछ बताते है जो हमें जानना चाहिये। वे सनातन ईश्वर है, वे समग्र अनंतकाल के अतीत से अस्तित्व में है और उस अनंतकाल के किसी समय में उन्होंने इस संसार का सृजन करने और मनुष्यों को अपने लिये बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने सम्पूर्ण उद्धार के कार्यक्रम की संरचना की और पूर्व नियति के अनुसार, यह जानकर कि मनुष्य पाप करेंगा, तय किया कि वे किस–किस का उद्धार करेंगे। इब्रानियों की पुस्तक के अनुसार प्रभु यीशु मसीह उन लोगों के पापों के लिये संसार की नेव रखे जाने से पहले मरे और जी उठे, और तब पुत्र ने संसार की सृष्टि की, पुत्र कहलाने के लिये, उसे पहले मरना था और मृतकों में से जी उठना था ताकि वह परमेश्वर का पुत्र घोषित किया जाये। ये सभी बातें हमें बाईबल बताती है और ये सभी वचन ''विश्वास के योग्य और सत्य'' है। हम बाईबल पर भरोसा कर सकते है। हम परमेश्वर की कही बातों पर भरोसा कर सकते है क्योंकि वे परमेश्वर है और सब बातें जानते है। वे अंत की बातें आरम्भ ही से जानते है, और वे सभी बातों के विषय में असीमित ज्ञान रखते है। परमेश्वर जानते है इस कारण वे बाईबल लिख सकते है और उनका प्रत्येक वचन सत्य है क्योंकि वे झूठ नहीं बोल सकते। वे विश्वास के योग्य भी है क्योंकि वे अवश्य जानते हैं कि संसार के अंत में क्या होगा। वे अपने वचन में विभिन्न स्थलों में अपनी प्रतिज्ञाएं रख सकते हैं जैसे कि उत्पत्ति की पुस्तक में, और वे हजारों वर्ष पहले से बता सकते है कि कौन सी घटनायें घटेगी, जैसा कि

उन्होंने हाबिल के वृतान्त में बताया, जो उन सभी बातों की ओर संकेत करता है जो महाक्लेश के दिनों में घटेगी। उन्होंने यूसुफ के वृतान्त और सात वर्ष के अकाल के द्वारा भी उन घटनाओं को दर्शाया जो संसार के अंत के दिनों में होने वाली है। यद्यपि वे घटनायें अंत के समय से 4000 वर्ष पहले या और भी अधिक पहले घटी थी, परमेश्वर उन्हें विश्वास योग्यता से लिख सकते थे। हम उन बातों का भरोसा कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर पहले से जानते थे कि क्या होगा।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने बाईबल के इतिहास की समयरेखा बाईबल में रखी है और उसने नूह से कहा कि ''अब से सात दिन के बाद पृथ्वी वर्षा होगी'' और फिर 2 पतरस के 3 रें अध्याय में वह हमें बतातें है कि : **प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं।** और वह इस जानकारी को जलप्रलय और जगत के अंत के बीच रखता है। बिचो–बीच वह इस कथन को इसलिए डालता है ताकि हमें यह सतझने में मदत हो कि हम इसापूर्व 4990 में नूह से किए गए इस कथन को लेकर ''एक दिन हजार वर्षों के समान'' पर लागू करने के लिए हमें बाईबल आधारित समर्थन मिले जिससे कि हम समझ जाए कि मनुष्य के पास उद्धार के उस जहाज (मसिह) में सुरक्षित होने प्रवेश करने के लिए केवल 7000 वर्षों का समय होगा और फिर जलप्रलय से बिल्कुल 7000 वर्षों के बाद उस दिन द्वार बंद होगा। परमेश्वर ने उस न्याय के दिन के संबंध में जिसका आरंम्भ 21 मई 2011 को हुआ, बाईबल में जानकारी रखी है। परमेश्वर ने उसे रेखांकित किया और उत्पत्ती के 7 वें अध्याय में उस जानकारी को रखा। जब परमेश्वर ने निर्गमन की किताब लिखने के लिए मूसा का उपयोग किया तब उसने मूसा को वह जानकारी दी, परंतु परमेश्वर नूह से यह पहले ही प्रत्यक्ष रूप से कह चुका था, इसलिए परमेश्वर ने कई वर्षों पहले न्याय के इस दिन को इस अद्‌भुत किताब में जिसे हम बाईबल कहते है, रेखांकित किया था। यह वचन विश्वास के योग्य है। यह वचन विश्वास के योग्य और सत्य है और जो सिद्धांत सिखाए गए है वे विश्वास के योग्य सिद्धांत है।

परमेश्वर ने बीच में अब्राहम को दी प्रतिज्ञा लिखवाई कि वह उसे अनंतकालीन मीरास के रूप में कनान देश देगा। उसने अब्राहम के वंशजों के लिये भी प्रतिज्ञा लिखवाई कि वे उस (प्रतिज्ञा के) देश में सदा–सर्वदा रहेंगे। एक नये आकाश और एक नयी पृथ्वी की ये प्रतिज्ञायें जिन्हें परमेश्वर ने 2700 वर्ष पूर्व लिखा, उसके वचन में कही गयी है। जब बाईबल कहती है कि परमेश्वर ''विश्वास के योग्य और सत्य'' है, उसका अर्थ यह है कि जो कुछ वह कह चुके है, वह अवश्य पूरा होगा क्योंकि परमेश्वर विश्वास करने योग्य है। यदि वे बातें पूरी नहीं होती, तो वे सत्य नहीं। सत्य और विश्वासयोग्यता का आपस में निकट संबंध है। परमेश्वर सत्य कहते है और वे जो प्रतिज्ञाएं करते है जिनका पूरा होना

भविष्य में है, तो उन पर भरोसा किया जा सकता है और उनके पूरे होने में जरा भी संदेह नहीं है।

यह संसार समाप्त होगा, मनुष्य चाहे जो भी सोचे या विश्वास करे और मनुष्य चाहे जैसी क्रिया–प्रतिक्रिया करे। वे चाहे तो यह मानकर कार्य करे कि यह संसार सदा–सर्वदा इसी प्रकार से चलता रहेगा, परन्तु इस संसार का अन्त परमेश्वर के विश्वासयोग्य वचन के अनुसार और बाईबल के सत्य के अनुसार होगा। जगत का अंत होगा और परमेश्वर हमें यह भी बताते है कि संसार का अन्त किन परिस्थितियों के बीच होगा। उन्होंने हमारे समय के समाज के बारे में बताया और नैतिकता (या उसके स्तर में कमी) के मानक के बारे में और अंत के दिनों की कलीसियाओं की दशा के बारे में बताया। हमने इन बातों को बाईबल से सीखा हैं क्योंकि परमेश्वर ने इन बातों को लिखा और अपने सच्चे एवं विश्वास करने योग्य वचन में रखा है। उन्होंने बताया कि अंत के दिनों में अधर्म बहुत बढ़ जायेगा और मनुष्यों के हृदय ठंडे हो जायेंगे, परमेश्वर ने रोमियों के प्रथम अध्याय में सविस्तार लिखा है, कौन से पाप संसार के अन्त के दिनों में आम हो जायेगे। उन सबको पढ़िये और मुझे बताइये कि क्या आप इन बातों को शाम के समाचार में नहीं सुनते या सुबह अखबार में नहीं पढ़ते। रोमियों 1:24–25 में लिखा है :

इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषाओं के अुनसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन॥

देखिये, परमेश्वर बाईबल में कैसे सत्य कहते है। वे कहते हैं कि 'पुरूष और स्त्री' है, कोई 'नपुंसक लिंग' नहीं। तब वे कहते है कि पुरूष अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे (पुरूष और स्त्री) मिलकर एकतन होंगे। परन्तु फिर भी संसार के लोग जो शैतान के प्रभाव में है, परमेश्वर के वचन के सत्य को लेकर उसकी अनंतकालीन आज्ञाओं को बदल देते हैं और वे बाईबल की अनंतकालीन वाचा को तोड़ देते है। प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर की वाचा से विवाहित है, और वे अपने पति–परमेश्वर की व्यवस्था के विरूद्ध व्याभिचार करता है। पुनः देखे, रोमियों 1:25 में लिखा है – ''उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला।'' जरा सोचिये कि आज क्या हो रहा है। वे एक निर्दोष भ्रूण की माँ के गर्भ में ही हत्या कर देते है और उसे 'अच्छी बात' कहते हैं, वे समलैंगिकता के पाप को भी 'अच्छी बात' कहते है, और वे समान लिग के दो व्यक्तियों के विवाह को मान्यता देते है, और यही बातें परमेश्वर की अन्य आज्ञाओं के विषय में भी पाते हैं। उदाहरण के लिये, परमेश्वर की व्याभिचार न करने की आज्ञा को लोगों ने यह कहकर

झूठ में बदल दिया है कि – ''ओह! वे दोनों परस्पर सहमत वयस्क है, तो कौन कहेगा कि यह बात गलत है?" वे 'सत्य' को 'झूठ' में बदल देते और उसे 'घास' के समान मामूली बात बना देते है। तब रोमियों 1:25–31 में आगे लिखा है :

क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन॥ इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरूद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरूष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरूषों ने पुरूषों के साथ निर्लज्ज़ काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया॥ और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्षा से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बनाने वाले, माता पिता की आज्ञा न मानने वाले। निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मायारिहत और निर्दय हो गए।

इस सूची में 23 पाप है जो उस समय की ओर संकेत करते है जब परमेश्वर मनुष्यों को उनके पाप के वश में कर देगा, वह 23 वर्षों का महाक्लेश का समय था। तब आगे रोमियों 1:32 में यह लिखा है :

वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले मुत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करने वालों से प्रसन्न भी होते हैं॥

बुरे कामों की कैसी लम्बी सूची है। क्या यह हमारे वर्तमान बुरे संसार का सही और सटीक चित्रण नहीं है? जी हाँ, संसार में ये सभी पाप किसी न किसी अंश में सदा से रहे है, परन्तु आज जितना बढ़ चुके है वैसे कभी नहीं थे। आज अधर्म का विस्फोट हो रहा है और पृथ्वी पर वह चारों ओर फैलता–बढ़ता जा रहा है, जैसा संसार के इतिहास में पहले कभी भी नहीं हुआ था। परमेश्वर ने पहले ही घोषणा की थी कि अंत के दिनों में अधर्म बहुत बढ़ जायेगा, और यह दर्शाता है कि परमेश्वर मनुष्यों को पाप के वश में छोड़ देंगे, और आज हम ठीक यही स्थिति देखते है। आज हम ऐसा संसार देखते है जो पूरे बल के साथ इन सभी पापों के पीछे भाग रहा है। पीछे लौटने का प्रश्न ही नहीं है, और न पुराने दिनों की ओर लौटने का कोई संकेत मिलता है जब नैतिकता का एक स्तर था। जहाँ तक संसार का प्रश्न है वह समय अब बीत चुका है, और वह समय अब कभी पलटकर नही आएगा।

परमेश्वर इन बातों को घटता हुआ दिखाकर दर्शा रहे हैं कि यह अंत का समय है। हम दिन प्रतिदिन बाईबल की बातों को सत्य प्रमाणित होता हुआ देख सकते हैं क्योंकि ससांर पाप में बढ़ता जाता है और कलीसियाएं विश्वास से पीछे हट चुकी है। इसमें कोई संदेह नहीं, और इस बात पर प्रश्न नहीं किया जा सकता कि सामुहिक कलीसियायें पूरी तरह धर्म का परित्याग कर चुकी है। हमें इस विषय के विस्तार में जाने और सोचने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह स्वाभाविक रूप में स्पष्ट है। हाँ, कलीसियायें, कलीसियाई युग के समूचे कालखण्ड में अविश्वासयोग्य रही हैं, परन्तु उस स्तर तक नहीं जैसा कि हम आज देखते है। यह समस्त कलीसियाई इतिहास में पहले कभी भी नहीं हुआ था।

हमारे पास एक ही समय में ये दो बड़ी विभीषिकायें संसार में और कलीसियाओं में है और यह बाईबल की बातों से मेल खाती है, जैसा बाईबल कहती है कि अंत के दिनें में होगा क्योंकि परमेश्वर आरम्भ से ही जानते थे कि अंत के समय में क्या होगा।

हम यह भी देखते है कि जलप्रलय से 7000 वर्षों का समय बिलकुल 21 मई 2011 को पूरा होता है और परमेश्वर ने इन बातों की घोषणा की थी। उन्होंने कहा – जब हम अंजीर के पेड़ में पत्ते देखते है, हम जान लेते हैं कि ग्रीष्मकाल निकट है, या जब हम सूर्य चन्द्रमा और तारों में चिन्ह देखते है, हमें स्वर्ग की ओर दृष्टि करना है, क्योंकि हमारा छुटकारा निकट है। परमेश्वर के लोग बाईबल के चिन्ह देख सकते है, वे चिन्ह परमेश्वर जिनकी अनुमति देते हैं, जो केवल बाईबल में ही देखे जा सकते है; हम बाईबल के प्रमाण अपने आस–पास देखते है और यही कारण है कि हमें अच्छी आशा और अपेक्षा है कि 7 अक्तुबर 2015 इस दुष्ट संसार पर परमेश्वर का दण्ड पूरा होगा, और न्याय के पूरा होने का अर्थ है संसार का अंत, इस पृथ्वी का विनाश, और इस शापित विश्व का अंत और नये आकाश और नयी पृथ्वी का सृजन और एक नये लोग। तब एक नये प्रकार के मनुष्य होंगे जो दूसरे आदम अर्थात् प्रभु यीशु मसीह की रीति पर होंगे। वे देह और आत्मा दोनों में नयी सृष्टि होंगे और नये अदन, आत्मिक कनान देश में रखे जायेंगे जिसकी प्रतिज्ञा अब्राहम से की गयी थी। परमेश्वर अपने लोगों के पास आयेंगे। वे हम से बात करेंगे। वे हमें सिखाएंगे और निर्देश देंगे। वह सब कैसा होगा? हम अभी नहीं जान सकते।

तब एक ऐसा समय आयेगा जब 'समय' नहीं होगा, और यह वर्तमान संसार और उसमें अनुभव की जाने वाली बातें नहीं रहेगी। वे पहली बातें है जो जाती रहेगी, उन्हें कभी स्मरण नहीं किया जायेगा या मन में नहीं लाया जायेगा, और वहाँ हम बाइबल के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ रहेंगे। उस समय सारी बातें पूरी हो जायेगी, और यह परमेश्वर के वचन के सत्य और विश्वासयोग्य होने का सकारात्मक प्रमाण होगा, उन सभी

बातों के संदर्भ में जो परमेश्वर ने अंत (और बीच में होने वाली सभी बातों के) बारे में पहले से घोषित कर दिया है। परमेश्वर का वचन सत्य और विश्वास करने योग्य है।

Revelation 21 Series, Study #12 by Chris McCann, originally aired , June 9, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 12, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 9 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 12 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:5 का अध्ययन करते आ रहे हैं :

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

हमारे अध्ययन में हम परमेश्वर के सच्चे स्वभाव के बारे में विचार कर रहे है। उसके महिमामय गुणों में से एक यह है कि वह सदैव सच बोलता है, और प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर है, और इसलिये यीशु ने कहा कि वह सत्य है। परमेश्वर का वचन, बाईबल परमेश्वर के मुख से आता है और पूरी तरह परमेश्वर के समान है, इसलिये उसका वचन भी सत्य है। पवित्र आत्मा सनातन परमेश्वर है, त्रिएकता का एक शीर्ष, इसलिये हम यूहन्ना 14 में सत्य के आत्मा के बारे में पढ़ते हैं। पवित्र आत्मा सत्य है। सत्य की पहिचान परमेश्वर से है – परमेश्वर सत्य है।

दूसरी ओर हम मनुष्य का विचार करे, बाईबल कहती है कि प्रत्येक मनुष्य झूठा है। वह कहती है कि हम झूठ के साथ जन्मे है और मनुष्य का हृदय सबसे अधिक धोकेबाज और दुष्ट है उसमें असाध्य रोग लगा है, इस प्रकार मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर के स्वभाव से पूरी तरह विपरीत है। एक सत्य है, दूसरा झूठा है, और शैतान झूठों का पिता है, और क्योंकि मनुष्य ने शैतान पर विश्वास किया, इस कारण वे उनके आत्मिक पिता के समान बन गये और उनमें सत्य की अपेक्षा झूठ के लिये प्रेम विकसित हो गया। परन्तु एक कथन और है जहाँ परमेश्वर अपने वचन के विषय में प्रकाशितवाक्य 21:5 के अन्त में कह रहे है:

लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

एक बार फिर कहूंगा कि यहाँ संदर्भ सम्पूर्ण बाईबल से है, केवल प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से नहीं। यह समस्त पवित्रशास्त्र पर लागू होता है और परमेश्वर के समस्त शब्द 'सत्य' है और परमेश्वर के समस्त शब्द 'विश्वास के योग्य' है। इसके पहले कि हम विचार करे, कि

बाईबल परमेश्वर के वचन के ''विश्वास के योग्य'' होने के विषय में क्या कहती है, आइये हम मनुष्यों की विश्वासयोग्यता से इसकी तुलना करे जैसा हमने 'सत्य' के संदर्भ में किया था। 2 थिस्सलेनिका 3:2 में यह लिखा है :

और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं॥

परमेश्वर यहाँ क्या कह रहे है, यदि हम इसे शीघ्रता से पढ़े तो चूक जायेंगे, वास्तव में वे सभी मनुष्यों को शामिल करके यह कथन कर रहे हैं, यह रोमियों 3 के कथन जैसा है, जहाँ कहा गया है कि **हर एक मनुष्य झूठा ठहरे**। बाईबल के अनुसार सभी मनुष्य झूठे है और उसी प्रकार स्वाभाविक (पाप में पतन की) दशा में मनुष्यों में विश्वास नहीं है क्योंकि वे आत्मिक रीति पर मृत है। यही कारण है कि कलीसिया द्वारा ग्रहण किया यह पूरा विचार असंभव है – वे मनुष्यों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे उद्धार पाने के लिये विश्वास को काम में लाये। परमेश्वर के स्तर पर ''सब मनुष्यों में विश्वास नहीं।'' निश्चय ही, कलीसियाओं में विश्वास का एक अतिशय कमतर स्तर है जिसमें वे विश्वास के अंगीकार का उपयोग करते है, वह केवल उनके मुख से निकलता है, जबकि उनका हृदय परिवर्तन नहीं हुआ और उनके लिये इतना भी ठीक है। मैं लोगों को स्वार्थी मानता हूँ परन्तु वास्तव में यही होता है। वे लोगों को उभारते और प्रेरित करते है कि वे ''मसीह को ग्रहण'' कर ले, और उद्धार पाने के लिये स्वयं के विश्वास के द्वारा प्रयास करे, परन्तु बाईबल कहती है, ''हर एक में विश्वास नहीं।'' उनमें उद्धार करने वाला विश्वास नहीं है, इस कारण सभी मनुष्य विश्वास के योग्य नहीं है। मसीह में मत्ती 17:17 में यहाँ तक कह दिया है :

यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।

वे जो बाईबल को शाब्दिक रूप में पढ़ते हैं, सोचते है कि यह केवल उस पीढ़ी के लिये कहा गया था जो मसीह के दिनों में थी, परन्तु यह बुरे लोगों की पीढ़ी है, जो पृथ्वी पर समस्त इतिहास के कालों में रही है, आदम के पाप में गिरने के बाद से संसार के अंत तक। यही कारण है कि मसीह ने कहा था कि जब तक उसके वचन पूरे न हो जाये वह पीढ़ी जाती न रहेगी, क्योंकि वह वही 'बुरे लोगों की पीढ़ी' है।

'बुरे लोगों की पीढ़ी' को समझने के लिये एक अन्य तरीका है कि हम उसे उस दृष्टि से देखे, जैसा यीशु मसीह ने मत्ती 17:17 में उसका वर्णन किया है। वे 'अविश्वासी' है और वे 'हठीले' है। अविश्वासी शब्द का अर्थ है, उनमें विश्वास नहीं, जैसा कि 2 थिस्स. के अध्याय 3 में भी कहा गया है। यह मनुष्य का स्वभाव है। वह विश्वास रहित है और वह ऐसा नहीं है कि आत्मिक बातों के विषय में उस पर विश्वास या भरोसा किया जा सके। वह ऐसा

नहीं है कि आप सत्य के लिये, बुद्धि के लिये या परमेश्वर के ज्ञान के लिये उस पर आधारित हो सके। मनुष्य पाप के कारण विश्वास रहित प्राणी है, इसलिये यदि आत्मिक बातों की जिम्मेदारी देना हो तो वह सबसे अंतिम है, जिसे आप चाहेंगे। परन्तु हमें विश्वास करने योग्य एक व्यक्ति के पास जाना चाहिये, और परमेश्वर विश्वास के योग्य है।

परमेश्वर सच कहते हैं और मनुष्य झूठा है, परमेश्वर मनुष्य नहीं कि वह झूठ बोले। हमें यह बात समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर मनुष्य नहीं है। मानवजाति एक सृष्टि है, एक प्राणी है, जो परमेश्वर के स्वरूप की समानता में सृजा गया था, परन्तु पाप में पतन के कारण उसने अपनी वह समानता नष्ट कर दी और अब वह परमेश्वर के व्यक्तित्व की छाया नहीं है, क्योंकि परमेश्वर सिद्ध, शुद्ध और पवित्र बना रहता है। वह सत्य और विश्वास के योग्य है और परमेश्वर का वचन भी सिद्ध, शुद्ध और पवित्र बना रहता है। यह मनुष्य है, परमेश्वर नहीं, जो अपनी उच्च दशा में नीचे गिरा है। परमेश्वर ऊँचे और महिमा के स्थानों में है, और वह सर्वोच्च परमेश्वर है, और उसका वचन भी इस संसार और उसकी बुराई (दुष्टता) से कहीं ऊँचे स्तर पर बना रहता है। परमेश्वर का वचन शुद्ध, वरन सात बार ताये गये सोने और चांदी से भी शुद्ध है, और यह बड़ी महिमामय और अद्‌भुत बात है कि इस दुष्टता भरे संसार में जहाँ हम किसी भी बात के लिये किसी मनुष्य पर भरोसा नहीं कर सकते, परमेश्वर का वचन, बाईबल है। वह सत्यता और प्रकाश का स्त्रोत है और विश्वासयोग्य परमेश्वर के सिद्ध चरित्र को प्रगट करती है, और यही बात बाईबल व्यवस्थाविवरण 7:8–9 में कहती है :

यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लाया, इसका यही करण है कि वह तुम से प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी। इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है; और जो उस से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएं मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा पालता, और उन पर करूणा करता रहता है;

"1000" का अंक समय की परिपूर्णता की ओर संकेत करता है; परमेश्वर सदैव और युगानुयुग विश्वास के योग्य है और वह अनंत भविष्यकाल में भी विश्वासयोग्य रहेगा, और उसका वचन भी विश्वासयोग्य बना रहेगा।

परन्तु पद 8 पर ध्यान दे, परमेश्वर कैसे उस तथ्य को प्रगट करते हैं कि उसने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी और वे अपनी वाचा का उल्लेख करते है। उन्होंने क्या शपथ खाई थी? उन्होंने अब्राहम से शपथ खाई थी कि वह देश उसका और उसके बाद उसकी

संतानों को अनंतकाल के लिये दिया जायेगा। उसने प्रतिज्ञा की थी कि उसका वंश आकाश के तारों के समान अनगिनत होगे।

परमेश्वर विश्वासयोग्य है। ऐतिहासिक रूप में, वह यहूदियों को मिस्र से छुटकारा देने में विश्वासयोग्य था, जैसी उसने अब्राहम के साथ प्रतिज्ञा की थी कि उसके वंशज चौथी पीढ़ी में मिस्र से बाहर निकाले जायेंगे और उस देश में वापस लौटेंगे। इस प्रकार से ऐतिहासिक रूप में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के भौतिक तत्व को पूरा किया, परन्तु हमने सीखा कि प्रतिज्ञा का अधिक गहिरा और आत्मिक तत्व है और वास्तव में सम्पूर्ण प्रतिज्ञा तब पूरी होगी, जब परमेश्वर अपने चुने हुओं को, मसीह के माध्यम से आत्मिक वंशजों को, नया आकाश और नयी पृथ्वी में प्रवेश कराऐंगे। एक बार जब वे नये आकाश और नयी पृथ्वी में प्रवेश कर लेंगे, तब वह समय इस प्रतिज्ञा के संदर्भ में परमेश्वर के वचन के पूरे होने का समय होगा। एक बार फिर कहूं कि यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के प्रमाणित होने का समय होगा, क्योंकि उसने इन बातों की प्रतिज्ञा अपने वचन में की है, और जब उसमें लिखी बातें पूरी होती है, उसका वचन सदैव सत्य और विश्वासयोग्य प्रमाणित होता है। निश्चय ही पृथ्वी के इतिहास में, अनेक शताब्दियों में परमेश्वर का वचन बार–बार सत्य एवं विश्वासयोग्य प्रमाणित हुआ है। वास्तव में ऐसी बहुत ही कम बातें रही है जिन्हें पूरा होना बाकी है, और उसके बाद परमेश्वर की प्रत्येक बहुमूल्य प्रतिज्ञा पूरी हो जायेगी। अब केवल बहुत थोड़ा समय शेष है, जब वह अपनी प्रतिज्ञाओं में की अंतिम प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा और वह ऐसा केवल तब कर सकता है जब वह इस संसार का नाश करे और नये आकाश और नयी पृथ्वी का सृजन करे।

इब्रानीयो 10:13 में लिखा है :

और उसी समय से इस की बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें।

यह परमेश्वर के संदर्भ में है और वह विश्वासयोग्य है।

1988 में शरू हुए महाक्लेश के संदर्भ में, जिसके बाद न्याय का आरम्भ हुआ, 1 पतरस 4:17 में लिखा है :

क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?

सबसे पहले कलीसियाओं पर न्याय आया और फिर वह 21 मई 2011 को मूडकर पृथ्वी के उद्धार न पाए हुए निवासीयों पर भी आया, इस प्रकार इस पद में दोनों न्यायों का उल्लेख है। 1 पतरस 4:18 में आगे लिखा है :

और यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?

निश्चय जब हम आज की आत्मिक स्थिति को देखते है, तब वह इस कथन से पूर्णरूप में मेल खाती है। कहा गया है कि धर्मियों का उद्धार भी कठिनाई से होगा। कलीसियाए आत्मिक रूप में नाश हो चुके है और कोई धर्मी बचा नहीं है। कलीसियाओं में लोगों की कठोर जाँच हुई है और उनमें से बहुत से वापस संसार में या धर्म का परित्याग कर चुकी कलीसियाओं में या पहले वाली धर्मशिक्षाओं में लौट चुके है। ऐसा लगता है कि उनका उद्धार बड़ी कठिनाई से होगा या बिल्कुल भी नहीं होगा। विश्वासियों में शेष बचे थोड़े से लोग है जो परमेश्वर के वचन की ठोस शिक्षाओं को थामे हुये है, और उनको अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। वे तुच्छ गिने जाते और लोग उन्हें नीचा देखते है। हम जानते है कि एक बड़ी भीड़ है जिसका उद्धार हुआ है, परन्तु उनमें से अधिकतर विभिन्न देशों में बिखरे हुये है और हम नहीं जान सकते कि वे करोडों लोग कहाँ–कहाँ है। हो सकता है वे चीन भारत या अफ्रीका में हो। आप उस बड़ी भीड़ को कैसे देख सकते है? निश्चय ही, उद्धार पाने में कठिनाई दिखाई देती है। तब 1 पतरस 4:19 में आगे लिखा है :

इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें॥

चुने हुये ''परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते है'', और पिछली पदों में संकेत है कि 'भले कामों के लिये दुख उठाना' या मसीह के लिये दुःख उठाना, या सत्य के कारण दुःख सहन करना एक धन्य बात है। आप दुःख उठाते हैं क्योंकि आप आपके भीतर पवित्र आत्मा के अनुसार विश्वास योग्यता से कार्य करते है और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते या पालन करते है। आप उनका इंकार नहीं करेंगे और समझौता नहीं करेंगे, और ऐसा करने पर किसी न किसी रूप में इस संसार में अकसर दुख उठाना पड़ता है, और जब तक यह परमेश्वर के वचन या मसीह के लिये है, यह एक अच्छी बात है। आप उसके लिये धन्यवाद दे सकते है और गर्व महसूस कर सकते है। दूसरी ओर, आप दुख उठाते हैं, आपके पाप के कारण एक हत्यारे के रूप में, बुरा काम करने वाले या दूसरों के काम में टांग अड़ाने वाले व्यक्ति के रूप में, तब यह धन्यवाद का विषय नहीं है। यही कारण है कि संसार के लोग उनके बुरे–बुरे कामों में दुख उठाते है।

अलग–अलग परिमाण में सभी दुख उठायेंगे, भले कामों के लिये या फिर बुरे कामों के लिये, परन्तु यदि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते है, तो इसका अर्थ है हम उस बात के लिये दुख उठा रहे हैं जो परमेश्वर ने हमें पवित्रशास्त्र में दिखाई है – वे उसकी आज्ञाएं है। उदाहरण के लिये परमेश्वर की इच्छा है कि रविवार उनका पवित्र सब्त का दिन है, और आज्ञा यह है कि उसके पवित्र दिन को मानने की चौकसी करे और परमेश्वर की संतान आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना चाहती है, और वह रविवार के दिन काम नहीं करेगा। हमारे आधुनिक समाज में ऐसा करना कठिनाई में डाल सकता है, क्योंकि अधिक से अधिक कम्पनियाँ चाहती है कि उनके कामगार सब्त के दिन भी काम किया करे और यह बात परमेश्वर की संतान को संकट में डाल सकती है। हम समझ सकते हैं कि यह कैसे होगा। और यही बात परमेश्वर की अन्य आज्ञाओं के विषय में भी सही है। जब परमेश्वर कहते हैं जिन्हें उन्होंने जोड़ा है, मनुष्य उन्हें अलग न करे। हम जानते है कि 50 प्रतिशत से अधिक विवाह तलाक पर समाप्त होते हैं। और कुछ विश्वासी है जो तलाक शुदा है और बाद में उन्होंने उद्धार पाया है। अब परमेश्वर की विश्वासयोग्य इच्छा उनके लिये क्या है? परमेश्वर की इच्छा यह है कि तलाक शुदा व्यक्ति अकेले रहे और विवाह न करे, जब तक कि पूर्व पति या पत्नी विवाह न कर ले और वे अपने पूर्व पति या पत्नी से भी पुनः विवाह कर सकते है। बाईबल के अनुसार उनके पास यही एक विकल्प है, इस कारण कुछ सच्चे विश्वासी है जो परमेश्वर की इच्छा को पूरी करना चाहते है वे अकेले ही रहेंगे। उन्हें अकेलापन अवश्य लगेगा और वे फिर से विवाह के संबंध में जाना पसंद कर सकते है, परन्तु वे उसे परमेश्वर के तरीके से करना चाहते है, इसलिये जब वे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का मन रखते है, उन्हें कुछ तकलीफ भी होगी।

इसी प्रकार से बाईबल की बहुत सी आज्ञाओं को लेकर होता है, परमेश्वर के लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सभी बातें करना चाहते है, भले ही वह उन पर कठिनाई, परेशानी, क्लेश या सताव लेकर आए। वे परमेश्वर के वचन के लिये दुख उठाते है क्योंकि परमेश्वर ने उनके भीतर विश्वासयोग्य आत्मा दी है। यह मसीह का आत्मा है।

इस पद में यहाँ लिखा है :

इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें॥

यहाँ फिर परमेश्वर को विश्वास के योग्य बताया गया है। उसे ''विश्वासयोग्य सृजनहार'' कहा गया है, और यह बातें हमें आरम्भ की ओर ले जाती है, जब उसने वचन कहे और

पृथ्वी एवं विश्व अस्तित्व में आये। जब परमेश्वर ने लगातार 6 दिन तक सृष्टि की फिर सूर्य, चन्द्रमा, तारे और सभी प्राणी अस्तित्व में आये। वे विश्वासयोग्य सृजनहार थे।

Revelation 21 Series, Study #13 by Chris McCann, originally aired , June 10, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 13, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 10 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 13 है, और हम अब भी प्रकाशितवाक्य 21:5 का अध्ययन कर रहे हैं :

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

पिछली बार हमने देखा कि कैसे बाईबल के अनुसार मनुष्य जाति विश्वासहीन है, पर परमेश्वर विश्वासयोग्य है। वे विश्वासयोग्य परमेश्वर है। 1 पतरस 4 की पद 19 के अनुसार वे विश्वासयोग्य सृजनहार है। हम देखेंगे कि यह भाषा प्रभु यीशु मसीह पर भी लागू होती है। निःसंदेह, हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये क्योंकि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर है।

प्रकाशित वाक्य 19:11 में लिखा है :

फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है।

संदर्भ के द्वारा यह दर्शाया जा सकता है कि यह यीशु है – उन्हें विश्वासयोग्य और सत्य कहा गया है। यह वैसा ही है जैसा हमारी संदर्भ पद प्रकाशितवाक्य 21:5 में है, ''लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य है।'' परमेश्वर के वचन के विषय में जो सत्य है, वही प्रभु यीशु मसीह के विषय में, और परमेश्वर के विषय में सत्य है। वे सत्य और विश्वासयोग्य दोनों हैं।

नीतिवचन में परमेश्वर ने 14:5 में एक रोचक कथन कहा है :

सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता, परन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें उड़ाता है।

मुझें लगता है, मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ कि 'सत्य' और 'विश्वासयोग्यता' आपस में किस प्रकार निकट संबंध रखते है। आप विश्वासयोग्य नहीं हो सकते यदि आपके पास सत्य नहीं है, और इसी प्रकार, आप विश्वासयोग्य नहीं हो सकते यदि आप सत्य नहीं है। यहाँ परमेश्वर कहते है – ''सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता'', इसका अर्थ है कि वह सत्य बोलेगा। और सत्यवादिता विश्वासयोग्य चरित्र का गुण है। बहुत से व्यक्ति हुये है जो सत्य से प्रेम रखते थे और हम सब श्रीमान कॅम्पिंग के उदाहरण से परिचीत है। श्रीमान कॅम्पिंग सत्य से प्रेम करते थे, और इसलिये वे ओपन फोरम या उनके बाईबल अध्ययनों में बहुत सावधान रहते और यत्नपूर्वक प्रयत्न करते कि जो भी वे कहे वह बाईबल के अनुसार सच हो। यह बात हमारे आधुनिक दिनों के पासबानों से अलग है जिनमें परवाह का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। लगता है कि पासबानों को केवल कुछ अंगीकारों एवं उनकी कलीसिया के कुछ विशेष विश्वास वचनों की ही परवाह है। ऐसा श्रीमान कॅम्पिंग के साथ नहीं था और न ही कोई सच्चा विश्वासी ऐसी चिन्ता करेगा।

सच्चे विश्वासी धर्मविज्ञानियों ने जो लिखा है या सुधारवादियों ने जो लिखा है उसके प्रति विश्वासयोग्य बनने की कोशिश नहीं कर रहे है। हम जॉन कैल्विन के प्रति विश्वासयोग्य बनने का प्रयास नहीं कर रहे है, और ऐसे कई व्यक्ति है, है ना? वे कैल्विनवादी है या वे 'लूथरन' है, और वे एक विशेष धर्मविज्ञानी की शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना चाहते है। वह व्यक्ति बहुत सी बातों में अवश्य ही विश्वासयोग्य धर्मविज्ञानी होगा, पर सब मनुष्य 'मिट्टी के बर्तन' है, इस कारण हम किसी मनुष्य के अनुसार आचरण का प्रयास नहीं करते। यदि हम करे तो निश्चय ही कमतर निकलेंगे क्योंकि बाईबल के अनुसार हर एक मनुष्य झूठा है, इसलिये हम मनुष्यों पर भरोसा नहीं करते। हम धर्मविज्ञानियों, टीकाकारों, अंगीकारों या विश्वास–वचनों पर भरोसा नहीं करते, चाहे ऐतिहासिक रूप में किसी कलीसिया में उन्हें कितना भी ऊँचा स्थान दिया हो। हम पासबानों, या प्राचीनों, या डीकन्स, या पोप या किसी अन्य मनुष्य पर भरोसा नहीं करते, हम केवल बाईबल पर भरोसा करते है और हम बाईबल के प्रति विश्वासयोग्य बनना चाहते है, और परमेश्वर की संतान परमेश्वर के वचन के सत्य को बोलना चाहती है। हम परमेश्वर के सच्चे वचन को अन्य लोगों के साथ बाँटना चाहते है, इसलिये एक सच्चे विश्वासी में विश्वासयोग्य साक्षी बनने की अभिलाषा होती है, क्योंकि यह विश्वासयोग्य साक्षी अर्थात् स्वयं परमेश्वर का स्वभाव है।

हम प्रभु यीशु के विषय में प्रकाशितवाक्य 1:5 में पढ़ते है :

और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे: जो हम से प्रेम रखता है, और जिस ने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।

यीशु मसीह विश्वासयोग्य साक्षी है। नीतिवचन 14:5 में यह उद्घोषणा की गई है कि सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता। यीशु ने यूहन्ना 14:6 में स्वयं अपने बारे में क्या कहा था? उसने कहा था, ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।'' विश्वासयोग्य साक्षी बनने के लिये, वो ही सत्य है। सत्य एवं विश्वासयोग्यता एक साथ चलते है। आप उन्हें अलग–अलग नहीं कर सकते, आप यह नहीं कह सकते, वह विश्वासयोग्य व्यक्ति है पर वह सत्य नहीं बोलता, या फिर, ''वह सत्यवादी है पर विश्वासयोग्य नहीं है।'' दोनों बातें एक साथ रहती है, और मसीह विश्वासयोग्य साक्षी है, और मसीह स्वयं सदेह परमेश्वर का वचन है। मूलरूप में यीशु स्वयं 'चलती–फिरती बाईबल' था, जब वे मनुष्यों के बीच चलते–फिरते थे, और जब वर्षों पहले वे मानव के इतिहास में आये, तब मानों बाईबल जीवित हो उठी थी। वहाँ वचन था, आदि में वचन परमेश्वर के साथ था, वचन परमेश्वर था और वचन देहधारी हुआ। हम कह सकते हैं कि उन दिनों में उत्पत्ति और लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकें चल फिर रही थी। वहाँ वचन था, सुन्दर, महिमामय, सिद्ध, शुद्ध और पवित्र वचन जो मनुष्यों के बीच चलता रहा था। वह विश्वासयोग्य साक्षी था, और उसने जो कुछ कहा, वह सत्य था। वे उसमें कोई दोष नहीं निकाल सके, यद्यपि उन्होंने बड़ी बारीकी से उसमें दोष ढूँढ़े। वे लगातार उसमें दोष ढूंढ़ने और गल्तियाँ निकालने या शब्दों में फँसाने के लिये प्रयासरत् थे, परन्तु वह विश्वासयोग्य साक्षी था। उसने बुद्धि के साथ सच कहा और वे उसे फंदे में फांस नहीं सके या जाल में उलझा नहीं सके या वह उनके बीच से चुपचाप निकल जाता था। यह मसीह का स्वभाव था और यही बाईबल की प्रकृति है।

भजन 119:86 में हम पढ़ते है :

तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं; वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे पड़े हैं; तू मेरी सहायता कर!

परमेश्वर की सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य है, और हमारे पास यह विश्वासयोग्य वचन ठीक हमारे घरों में है। यदि आप जानना चाहते हैं कि विश्वासयोग्यता क्या है या विश्वासयोग्य बनने के लिये क्या करना है, तो बाईबल पढ़ें। परमेश्वर आपको और मुझको बताएंगे कि विश्वासयोग्यता के लक्षण क्या है और वे हमें प्रतिदिन सिखाएंगे, क्या आप आज विश्वासयोग्य बनना चाहते है? ''आज के दिन के लिए आज का दुख ही बहुत है। अपना क्रूस उठा और मेरे पीछे चल।'' वे हमें मार्गदर्शन देंगे और अपनी आज्ञाओं के द्वारा दिशा

बताएंगे और उनकी बताई हुई बातें सिद्ध मानक है। यदि हम परमेश्वर की संतान है तो उसने पहले ही हमें नया हृदय और नयी आत्मा और उनकी सिद्ध सुइच्छा को पूरा करने की इच्छा, और विश्वासयोग्य ठहरने की इच्छा दी है।

भजन संहिता 119:138 में लिखा है :

तू ने अपनी चितौनियों को धर्म और पूरी सत्यता से कहा है।

यह परमेश्वर का विश्वासयोग्य वचन है, यही कारण है कि जब हम बाईबल पढ़ते हैं और उसमें वर्षों पहले अब्राहम के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में पढ़ते हैं कि वह देश उसकी अनंतकालीन मीरास होगा, हम जानते हैं कि यह विश्वासयोग्य प्रतिज्ञा है। वे सब विश्वासयोग्य आज्ञाएं है। परमेश्वर बार–बार हमें इस प्रतिज्ञा के बारे में बताते हैं, और उन्होंने यशायाह 65 में स्पष्ट किया है, जहाँ वे नये आकाश और नयी पृथ्वी उत्पन्न करने की बात कहते है, और उनमें 'बीज' होगा और परमेश्वर के चुने हुये लोग लम्बे समय तक स्वयं के हाथों के काम का आनन्द उठाएंगे। उसके चुने हुओं की आयु वृक्षों के समान होगी, यहाँ जीवन के वृक्ष, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह की ओर संकेत किया गया है। चुने हुये लोग सदा–सर्वदा जीवित रहेंगे, और यह भी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का एक भाग है। स्मरण करे, परमेश्वर इब्रानियों 9:15 में कहते है :

और उसके ऊपर दोनों तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित्त के ढकने पर छाया किए हुए थे: इन्हीं का एक एक करके बखान करने का अभी अवसर नहीं है।

परमेश्वर का विश्वासयोग्य वचन, बाईबल है जो आपको और मुझको अनंतजीवन के बारे में बताती है। यह हमारा अपना विचार नहीं है और न ही हम स्वयं इस प्रकार की योजना लेकर आये। हमने नहीं सोचा (न हम कभी इस प्रकार की कोई बात कभी सोच सकते थे) कि अयोग्य, गन्दे और सड़ाहट से भरे पापीजन, जिन्होंने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया और घूसे लहराए वे परमेश्वर से अनुग्रह और अनंतजीवन पा सकते है। हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि परमेश्वर उन्हें सब पापों से शुद्ध करेगा, और भ्रष्ट मन एवं देह को दूर करके एक नयी सृष्टि बनाएगा जिसमें एक नयी आत्मा और नयी देह होगी, और उन्हें एक नये आकाश और एक नयी पृथ्वी में रखेगा। हम निश्चय ही इन सब बातों के बारे में सोच नहीं सकते थे। ये बातें परमेश्वर के मन और मुख से निकली है। अपनी विश्वासयोग्य आज्ञा के अनुसार, उसने उन्हें कहा है और विश्वासयोग्यता से इनकी घोषणा की है।

ध्यान दीजिये कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के बारे में हम 1 थिस्सलुनीकियों 5:23–24 में क्या पढ़ते है :

शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा॥

तुम्हारा बुलाने वाला विश्वासयोग्य है, पर उससे भी बढ़कर वह यह करने के लिये विश्वासयोग्य (सच्चा) है। यदि वह ऐसा न करे, तो वह सच्चा नहीं, यही विश्वासयोग्यता है, जैसे कि उसने ऐतिहासिक रूप में इब्राहीम से प्रतिज्ञा की, कि उसके वंशज एक पराए देश में 400 वर्ष तक परदेशी होकर रहेंगे। वास्तव में यह 430 वर्ष बाद हुआ था, पर पहले 30 वर्ष उन पर कोई विपत्ति नहीं थी। प्रतिज्ञा यह थी कि 400 वर्ष दुख उठाने के बाद वे वापस आयेंगे। परमेश्वर की दृष्टि उन पर थी और उसने मूसा के द्वारा तैयारियाँ की, और ठीक समय पर उसने अपने वचन की विश्वासयोग्यता के अनुसार अपने लोगों को छुटकारा दिया, क्योंकि परमेश्वर को उनकी चिन्ता थी। यह नहीं कि मनुष्य को चिन्ता थी, ऐसा भी नहीं कि मनुष्य परमेश्वर को जवाबदेह ठहराये, जैसा वे अकसर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को भूल जाते हैं और उन्हें याद नहीं रहता कि परमेश्वर ने अपने वचन में क्या बाते कही है, परन्तु परमेश्वर कभी नहीं भूलते। वे कभी असफल नहीं होते। वे उन्हें स्मरण में रखते है क्योंकि वे चाहते है कि उनकी प्रजा जाने कि वे विश्वास के योग्य परमेश्वर है जो उन बातों को करके दिखाएंगे।

यह हमें हमारी अगली पद में पहुँचाता है, प्रकाशितवाक्य, अध्याय 21। ध्यान दे कि पद 5 के अंत में यह कहा गया है, ''लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य है।'' उसके बाद, प्रकाशितवाक्य 21:6 में लिखा है :

फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं.....

''ये बातें'' पूरी हो गई है। यह 1 थिस्सलुनीकियों 5:24 के कथन के समान है, जिसमें कहा गया है, ''तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है और वह ऐसा ही करेगा।" जब आप कुछ करते है, वह काम पूरा हो जाता है। निश्चय यह भूतकाल है, यह पूरा हो चुका है या यह कार्य समाप्त हो चुका है। इसका किया जाना अब हो चुका है। यह हमें इसी अध्याय की प्रारम्भिक पदों की ओर ले चलता है जिसमें कहा गया है, ''फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।'' यह हो चुका, और तब परमेश्वर कहते है कि वह उनके परमेश्वर होंगे और परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके साथ निवास करेगा। तब प्रभु कहते हैं कि वह

उनकी आँखों से सब ''आँसू पोंछ डालेगा और उसके बाद रोना, मृत्यु या पीड़ा नहीं रहेगी।" ये बातें पूरी हो गई है। परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य वचन को पूरा किया है। जी हाँ, इसमें समय अवश्य लगा, पर उसने अपनी दृष्टि इन बातों पर रखी थी, और ठीक समय पर (समय और कालों के उसके काल–विभाजन (time table) के अनुसार), उसने यह सम्पन्न किया और तब घोषणा की, ''ये बातें पूरी हो गई है।''

हम सोच सकते हैं कि इसका संबंध केवल 'नये आकाश और नयी पृथ्वी' से है। वास्तव में इसका संदर्भ परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं (के पूरे होने) से है। ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद "पूरी हो गई" किया गया है, वह "जिनोमाई" (ginomai - स्ट्रॉंग # 1096) है, और नये नियम में उपयोग हुये आम ग्रीक शब्दों में से एक है। इसलिये यह सबसे अधिक आसान शब्द नहीं है क्योंकि यह सैकड़ों बार उपयोग हुआ है पर मत्ती 26 में हम एक संकेत पाते हैं कि हमारी पद प्रकाशितवाक्य 21:6 में प्रभु का अभिप्राय क्या था, वहाँ वे कहते है, ''ये बातें पूरी हो गई है।'' मत्ती 26:53–56 में यह लिखा है :

क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? परन्तु पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होंगी? उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिये निकले हो? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन के पूरे हों: तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥

यहाँ भी एक जाना पहिचाना कथन है और यही ग्रीक शब्द "पूरी हो गई", "जिनोमाई" उपयोग हुआ है, जैसा की लिखा है, ''परन्तु पवित्रशास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, कैसे पूरी होगी।''

हम मरकुस 13:28–31 में भी पढते है :

अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उस की डाली को मल हो जाती; और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है। इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है वरन द्वार ही पर है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।

हमारे संदर्भ में आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे पर मसीह के शब्द नहीं टलेंगे। उसने यह भी कहा कि पीढ़ी (बुरी बातों से भरी) जाती न रहेगी जब तक कि ये बातें न हो ले। यही

विचार हम प्रकाशितवाक्य 21 की पद 6 में देखते है – आकाश और पृथ्वी टल चुकी है और परमेश्वर की आज्ञाएँ एवं प्रतिज्ञाएं अब पूरी हो चुकी है – वे बातें पूरी हो चुकी है। आकाश और पृथ्वी टल गये, परन्तु परमेश्वर का वचन जो विश्वास के योग्य है नये आकाश और नयी पृथ्वी और विश्वासियों की नई देहों के साथ अनवरत अनंत भविष्यकाल में जारी है, वे अनंतकाल में सदा–सर्वदा अनवरत है और ये बातें पूरी हो गई है। परमेश्वर ने इस संसार के बारे में और अपने सुसमाचार के कार्यक्रम के बारे में जो कुछ भी कहा, वह पूरा हो चुका। प्रत्येक न्याय (दण्ड) की बातें जो परमेश्वर ने कहीं और प्रत्येक वचन जो उसके लोगों के छुटकारे के लिये उसने कहा, वह सब पूरे हुए। बादलों पर उठाया जाना, पुनरूत्थान, और विश्व का अंतिम विनाश और दुष्टों का (समूल) नाश, इत्यादि हो चुका। अब आगे उनका अस्तित्व नहीं रहेगा। एक बार जब आकाश और पृथ्वी मिट गये और परमेश्वर ने नये आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि की, सब कार्य सम्पन्न हो चुके। सभी बातें पूरी हो गई है। बाईबल अंतिम रूप में पूरी हो चुकी है। बाईबल की प्रत्येक प्रतिज्ञा पूरी तरह पूरी हुई, क्योंकि परमेश्वर एक विश्वासयोग्य परमेश्वर है। परमेश्वर का वचन पूरी तरह सत्य और विश्वास के योग्य है और यह पूरा हो चुका है।

Revelation 21 Series, Study #14 by Chris McCann, originally aired , June 12, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 14, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 12 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 14 है, और हम प्रकाशित वाक्य 21:6 पढेंगे :

फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।

जब परमेश्वर कहते है – ये बातें पूरी हो चुकी है, तब उनका अभिप्राय है कि समस्त शास्त्रलेख और सभी भविष्यद्वाणियाँ पूरी हो चुकी है। जो कुछ उसने आरम्भ से कहा, और बाईबल के लेखन के दौरान जो–जो बातें कही, वे सब बातें पूरी हो चुकी है। काम समाप्त हो चुका है। संसार के अंत से संबंधित उसके सभी कथन, चुने हुओं का उद्धार और नये आकाश और नयी पृथ्वी से संबंधित परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं जो अब्राहम, इसहाक और याकूब को दी गयी थी, और आत्मिक वंश (बीज) की प्रतिज्ञाएं पूरी हो चुकी और अब वे सब समाप्त हो चुकी है।

तब प्रभु आगे कहते है – ''मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत हूँ।" वे अल्फा है और वे ओमेगा है। यह पहली बार नहीं जब मसीह ने यह कहा था। जब हम प्रकाशित वाक्य की पुस्तक का आरम्भ देखते है, वहाँ दो बार यह घोषणा की गई। प्रकाशित वाक्य 1:8 में लिखा है :

प्रभु परमेश्वर वह जो है, और जो था, और जो आने वाला है; जो सर्वशक्तिमान है: यह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमेगा हूं॥

यह प्रकाशित वाक्य 1:10–11 में भी पाया जाता है :

कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना। कि जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख कर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे, अर्थात इफिसुस और स्मुरना, और पिरगमुन, और थुआतीरा, और सरदीस, और फिलेदिलफिया, और लौदीकिया में।

प्रकाशित वाक्य की पुस्तक के पहले ही अध्याय में प्रभु यीशु मसीह दो बार यह घोषणा करते हैं कि वे 'अल्फा और ओमेगा' है। वे आदि और अंत है, वे ही प्रथम और अंतिम है। ये तीनों ही कथन समान अर्थ रखते है। आरम्भ या आदि होने का अर्थ 'प्रथम' या 'अल्फा' होने से है। अंत होने का भी वही अर्थ है जो 'अंतिम' या 'ओमेगा' शब्द से है। अल्फा एवं ओमेगा शब्द ग्रीक वर्णमाला के 'प्रथम' और 'अंतिम' अक्षर है। इसलिये मसीह ही प्रथम अक्षर और अंतिम अक्षर है, और स्वयं का वर्णन करने का परमेश्वर का यह तरीका रोचक है। ये अतिरिक्त नाम है जो परमेश्वर स्वयं के लिये उपयोग करते है। 'अल्फा' और 'ओमेगा' सम्पूर्ण बाईबल में केवल 4 बार आये है, और चारो बार प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में ही आये है। हम पहले अध्याय में दो बार, एक बार प्रकाशित वाक्य 21:6 में, और चौथी और अंतिम बार प्रकाशित वाक्य 22:12–13 में पढ़ते है :

देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। मैं अलफा और ओमिगा, पहिला और पिछला, आदि और अन्त हूं।

परमेश्वर सदैव ही 'अल्फा' और 'ओमेगा' इन शब्दों को आदि और अंत से, और प्रथम एवं अंतिम के साथ जोड़ने में दृढ़ प्रतिबद्ध रहे है। निश्चय ही यह हमारी सहायता करता है कि हम समझ सके कि वे ठीक–ठीक क्या कह रहे हैं। मसीह आदि है। बाईबल के अनुसार, वह मृतकों में से जी उठने वाले पहलौटे है, परन्तु यूहन्ना 1:1 में यह लिखा है :

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

उसके बाद आगे यूहन्ना 1:14 में लिखा है :

और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

मसीह देहधारी वचन है, और वह वही वचन है जो आदि में था और वही वचन है जो परमेश्वर है। यह वही है जिसने उत्पत्ति 1:1 के अनुसार आदि में संसार की सृष्टि की :

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।

बाईबल कहती है कि मसीह अर्थात् पुत्र ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की क्योंकि वह परमेश्वर है, ''आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' हमें असमंजस में नहीं पड़ना चाहिये क्योंकि मसीह को आरम्भ कहा गया है जबकि हम जानते है कि परमेश्वर का न आरम्भ है और न अंत। परमेश्वर सनातन है। वह सदैव अनंत अतीत में थे और वे अनंत भविष्यकाल में भी लगातार बने रहेंगे। यही कारण है कि जब हम इब्रानियों के अध्याय 7 में मेल्कीसेदेक का वर्णन पढ़ते है, वह स्वयं परमेश्वर ही है। पुराने नियम में बाईबल के पन्नों में वर्णित इस रहस्यमय चरित्र (व्यक्ति) के बारे में इब्रानियों 7:3 में यह लिखा है :

जिस का न पिता, न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा॥

मेल्कीसेदेक ईश्वरत्व का दृश्य प्रतिरूप था। यह पवित्र आत्मा के द्वारा कुंवारी मरियम के गर्भ में आने और इस संसार में देहधारण कर जन्म लेने से पहले इतिहास में मसीह का प्रगटीकरण था। यह मसीह का प्रगटीकरण था और उसने स्वयं को देह रूप में मेल्कीसेदेक बनकर दिखाया, परन्तु वह वास्तव में परमेश्वर था। ऐसा लिखा है कि, ''उसके दिनों का न आदि है और न जीवन का अंत है।'' इस कारण जब हम पढ़ते हैं कि मसीह 'अल्फा और ओमेगा' है (आदि और अंत) तब हमें इस कथन को इस समझ के साथ स्वीकार करना होगा कि परमेश्वर का कोई आदि (आरम्भ) नहीं है। इस संसार के आरम्भ में मसीह ने इस संसार को सृजा और वह मृतकों में से सर्वप्रथम जन्म लेने वाला 'आदि' है, उस अर्थ में वह 'आदि' है। जब हम पुराने नियम में पढ़ते है, परमेश्वर हमें यशायाह 48:3–5 में यह बताते है :

होने वाली बातों को तो मैं ने प्राचीनकाल ही से बताया है, और उनकी चर्चा मेरे मुंह से निकली, मैं ने अचानक उन्हें प्रगट किया और वे बातें सचमुच हुईं। मैं जानता था कि तू हठीला है और तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माथा पीतल का है। इस कारण मैं ने इन

बातों को प्राचीनकाल ही से तुझे बताया उनके होने से पहिले ही मैं ने तुझे बता दिया, ऐसा न हो कि तू यह कह पाए कि यह मेरे देवता का काम है, मेरी खोदी और ढली हुई मूर्तियों की आज्ञा से यह हुआ॥

यहाँ परमेश्वर कह रहे है कि उसने होने वाली बातों को आरम्भ से ही बता दिया था। वे यशायाह 46:9–10 में अधिक स्पष्ट रूप में कहते है :

प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से है; क्योंकि ईश्वर मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।

ध्यान दीजिये कि परमेश्वर किस प्रकार अंत की बातों को पहले से (आरम्भ) बताने की बात कहते है, ''**प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई।**'' हम प्रकाशित वाक्य की हमारी संदर्भ पद में पढ़ते है, वहाँ परमेश्वर ने कहा – ''ये बातें पूरी हो गई।'' वे परमेश्वर की प्राचीनकाल की युक्तियाँ है और कभी–कभी वे इतनी पुरानी है कि हमें संसार की नेव रखे जाने के समय तक पहुँचाती है। उसने उनकी घोषणा कहाँ की? केवल एक स्थान है जहाँ हम परमेश्वर की घोषणाओं को पा सकते है और वह स्थान बाईबल है। बाईबल में परमेश्वर द्वारा की गयी घोषणाओं के शब्द है और वही उन्होंने 'अंत की बातें आरम्भ' में ही बता दी थी। इस कारण हम आश्चर्य नहीं करते कि उन्होंने दानिय्येल से कहा, अंत के समय के लिये ''इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को बन्द रख'', और तब ज्ञान बहुत बढ़ जायेगा। परमेश्वर ने इसे बाईबल में घोषित किया है और उसे इतिहास के उचित समय के आने तक गुप्त रखा है। महाक्लेश के समय इन बातों को खोला गया जिस दौरान हम न्याय के दिन में जगत के अंत की धार पर चल रहे है।

यीशु 'अल्फा' और 'ओमेगा' है। यहाँ तक कि कलीयिाओं के लोग भी मानते है कि यह संदर्भ यीशु के लिये है। वह 'आदि और अंत' भी है, और वे फिर एक बार सहमति में सिर हिलाएंगे और यह समझेंगे कि आदि में उसने वचन कहे और संसार की सृष्टि की, ''आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' यीशु आदि में परमेश्वर था, सभी चर्च तो नहीं, पर वे चर्च जो अतीत में विश्वासयोग्य रहे हैं, वे समझते है कि उसे आरम्भ में ही सम्पूर्ण ज्ञान था, पर जब मसीह के दूसरे नाम पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि वह ''आदि और अंत'' था, वे लोग कहते है, ''जी हाँ, यह नाम मसीह का ही है, परन्तु वह नहीं जानता कि अंत कब होगा, उसके पास यह जानकारी नहीं है।'' आप समझ सकते है कि यह सोचना कितना हास्यास्पद है कि वह जिसका नाम 'अंत' है, उसे

अंत के दिनों की जानकारियाँ नहीं है। यह विचार बाईबल में नहीं है। यह विचार कलीसियाओं का है, वे वास्तव में नहीं मानते कि यीशु पूर्ण रूप में परमेश्वर है क्योंकि वे सोचते हैं कि यीशु के पास परमेश्वर का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। वे नहीं सोचते कि प्रेरितों के काम 15:18 के अनुसार क्या लिखा है कि परमेश्वर क्या जानते है :

यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।

संसार की उत्पत्ति और संसार के अंत के समय तक परमेश्वर के जितने भी कार्य है, उन्हें मसीह जानते है, इसका अर्थ यह है कि वे सब बातों के विषय में सबकुछ जानते है। वे सब जानते हैं कि वे किस–किस का उद्धार करेंगे, कब वे लोग उद्धार पाएंगे, कब उद्धार की उनकी योजना पूरी होगी, और कब वे संसार पर न्याय करने क्रोध करेंगे। ये सभी बातें परमेश्वर को पता है। परन्तु कलीसियाए कुछ और कहती है क्योंकि वे वास्तव में नहीं समझती कि मसीह शरीर में होकर भी परमेश्वर है और उनमें ईश्वरत्व की सम्पूर्णता सदेहवास करती है। वे मरकुस 13:32 को लेकर अपनी स्वयं की बनाई गलत धर्मशिक्षा में धोका खा रहे है – ''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, न पुत्र, परन्तु केवल पिता।'' और वे इस बात पर जोर देते हैं कि चूंकि स्वर्गदूतों और पुत्र को 'न्याय के दिन' के विषय में समय का ज्ञान नहीं है, वे अपने आप को ऐसी स्थिति में रखते हैं जो बाईबल के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महत्व को कमतर करते हैं, क्योंकि बाईबल घोषणा करती है कि 'समय' उससे छिपे हुये नहीं है। अय्यूब 24:1 में यह लिखा है:

सर्वशक्तिमान ने समय क्यों नहीं ठहराया, और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं वे उसके दिन क्यों देखने नहीं पाते?

परमेश्वर स्वयं से 'समयों' को गुप्त नहीं रखते क्योंकि वे परमेश्वर है। पिता जानते हैं और मसीह पिता के साथ एक है, इसलिये निश्चय ही वे जानते हैं कि संसार का अंत कब होगा। जब वे अनंत भविष्यकाल की सब बातें जानते है, तब वे पृथ्वी के इतिहास के अंत के दिनों के विषय और इस संसार के अंत के बारे में कैसे अज्ञात रह सकते है? इस बात पर बहुविधि विस्तार से विचार नहीं किया गया है, और परमेश्वर की संतान को यह समझने में सहायता मिलती है जब यह कहा गया कि कोई स्वर्गदूत नहीं जानता या पुत्र नहीं जानता, तब वह बौद्धिक ज्ञान के विषय में नहीं कहा गया है। परन्तु इसका संबंध न्याय को अनुभव करने से है। जब मसीह ने ये शब्द कहे, तब मनुष्य ने आधिकारिक रूप में परमेश्वर के अंतिम न्याय का अनुभव नहीं पाया था। गिराए गये स्वर्गदूतों का तब तक न्याय नहीं किया गया था (जो क्रूस पर होने वाला था) और यीशु भी मनुष्य के पुत्र के रूप में न्याय को अनुभव करने क्रूस पर नहीं चढ़ाये गये थे। परन्तु उन्होंने परमेश्वर के न्याय का अनुभव

पहले ही कर लिया था, जब पृथ्वी की नेव के समय वे मरे और मृतकों में से जी उठे ताकि वे परमेश्वर के पुत्र कहे जाये।

आइये, हम प्रकाशितवाक्य 21:6 की हमारी संदर्भ पद के अंतिम भाग पर विचार करे :

.....मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।

यहाँ एक कथन है जो हमें चकित करता है। यह चकित करता है, क्योंकि यह भाषा – ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा'', हमें सुसमाचार का स्मरण कराती है कि जब परमेश्वर अब भी लोगों को उद्धार दे रहे थे। परन्तु संदर्भ पर ध्यान दे। हम प्रकाशितवाक्य 21:1 में पढते है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

तब दुल्हिन स्वर्ग से उतरकर आती है और परमेश्वर यह महिमामय घोषणा करते हैं कि वह अपने लोगों के बीच रहेंगे। तब प्रकाशितवाक्य 1:4–5 में यह लिखा है :

यूहन्ना की ओर से आसिया की सात कलीसियाओं के नाम: उस की ओर से जो है, और जो था, और जो आने वाला है; और उन सात आत्माओं की ओर से, जो उसके सिंहासन के साम्हने हैं। और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे: जो हम से प्रेम रखता है, और जिस ने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।

संदर्भ संसार के अंत का है, और यह वर्तमान सृष्टि जाती रही। उस काल में नया आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि है और प्रचुर भरपूरी की आशीषें परमेश्वर के लोगों को दी गयी है। उन्हें शांति दी गई है, क्योंकि तब आँसू, मृत्यु और पीड़ा नहीं है। परमेश्वर ने सबकुछ नया कर दिया है, नयी पुनरूत्थित देह, नयी पृथ्वी, और नया आकाश। पुरानी बातें बीत गई और इस बिन्दु पर परमेश्वर कहते है, ''मैं प्यासे को जीवन के जल में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।'' तो यह बात संसार के अंत से कैसे मेल खाती है? यह अंतिम दिन है जिसके विषय में हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में पढ़ रहे है। परन्तु यीशु ने यूहन्ना 7:37 में जो कहा है, उसे स्मरण रखें :

फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।

यहाँ एक बार फिर पाते हैं – ''जो प्यासा है, मेरे पास आये।'' हमारी पद में कथन है – ''मैं प्यासे को जीवन के जल में से सेंतमेंत पिलाऊंगा'', यह प्यास को बुझाने के विषय में है, परन्तु यूहन्ना 7:37, ''पर्व के अंतिम दिन सबसे मुख्य दिन'' के विषय में कहता है जिसका संबंध 'झोपड़ियों के पर्व' के अंतिम दिन से है। क्या यह वह समय है जब परमेश्वर अपना सुसमाचार भेज कर लोगों का उद्धार कर रहे है ? नही! यद्यपि यह एक ऐसा पद है जिस पर कुछ लोग इस विषय में आलोचना करते है कि परमेश्वर ने 21 मई 2011 को उद्धार की योजना का अंत किया, और वे कहते है "यीशू अंतिम दिन तक लोागें को अपने पास बंला रहा है, यह अब भी उद्धार का दिन है, और वे उस दिन अर्थात् पर्व के अंतिम दिन कह रहे है।" इस प्रकार वे यह वाक्यांश 'अंतिम दिन' जिसपर वे जोर दे रहे है वह बाईबल में केवल आठ ही बार मिलता है, जिसमें से छः बार इसका संबंध 'संसार के अंत' से है और दो बार यह 'झोंपडियों के पर्व' से संबंधित है (जैसा कि यहाँ है), इस कारण झोंपडियों के पर्व का अंतिम दिन, संसार के अंतिम दिन से संबंधित है। परन्तु वे कह रहे है कि इस बात का अर्थ यह है कि परमेश्वर तब भी उद्धार करने के लिये सुसमाचार भेज रहे हैं, अंत के दिनों में भी। वे कहते है, "देखो, तुम गलत हो लोगों का उद्धार करना परमेश्वर ने नही रोका है। वे अब भी लोगों को उद्धार पाने के लिये बुलाहट दे रहे हैं।"

क्या यह सत्य है? यह रोचक बात है कि हमारी प्रकाशित वाक्य 21 की संदर्भ पद में 'अंतिम दिन' का संदर्भ है। यह संसार का अंत है। हम इसी बात पर ध्यान दे रहे हैं कि यह संसार के अंतिम दिन में घटे। हम प्रतीक्षा में है कि यह शापित सृष्टि जाती रहे, और एक नये आकाश और नयी पृथ्वी का सृजन हो, परमेश्वर हमारी शापग्रस्त देहों से पाप को दूर करे, और तब पाप और मृत्यु हम से अलग हो जाये। जब आप से पाप और मृत्यु दूर हो जाती हैं, तब रोना–पीटना, आँसू और पीड़ा भी आप से दूर हो जाते है। इसलिये झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन जो होने की हम अपेक्षा करते है, वे सभी बातें प्रकाशित वाक्य 21 में सटीक बैठती है। निःसंदेह, 7 अक्तुबर 2015 झोंपड़ियों के पर्व का अंतिम दिन था।

हम हमारे अगले अध्ययन में जब एकसाथ आते है, हम अधिक गम्भीरता और निकटता से शब्द 'प्यास लगना' पर विचार करेंगे। यहाँ जब परमेश्वर जो प्यासों को आमंत्रित करते है, और कहते है, ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा'', इस बात का क्या अर्थ है?

Revelation 21 Series, Study #15 by Chris McCann, originally aired , June 15, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 15, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 15 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 15 है, और हम प्रकाशित वाक्य 21:6 पढेंगे :

फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।

हमारे पिछले अध्ययन में हम छँटवे पद के अंतिम भाग पर विचार कर रहे थे, जहाँ परमेश्वर कहते है, ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।'' इसी अध्याय की पद 1 के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि प्रकाशित वाक्य 21 का संदर्भ अंतिम दिन अर्थात् संसार के अंत से है, पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही और एक नया आकाश और नयी पृथ्वी दिखाई दी। यह वह समय है जब "आँसू पोंछ दिये गये, और रोना–पीटना, मृत्यु और पीड़ा न रही।" परमश्वेर ने सब कुछ नया कर दिया। तब वे यह कथन कहते है, ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।'' हमारी प्यास के लिये जल है और हमें उसे पीना है, और संदर्भ से स्पष्ट है कि यह समय इस संसार के अंत और नये आकाश एवं नई पृथ्वी के सृजन का है, क्योंकि उसी समय सभी बातें नई कर दी जायेगी। परमेश्वर के चुने हुये लोग उस सृष्टि में उनकी नयी पुनरूत्थान प्राप्त आत्मिक देहों के साथ आएंगे, और वे प्रतिज्ञा के देश से जुड़ी परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। फिर भी परमेश्वर 'प्यासे को जल' देने की बात कहते है और यही बात हमें आश्चर्यचकित करती है, जैसा कि हम ने पिछले अध्ययन में यूहन्ना 7:37 में देखा था :

फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।

यहाँ झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन का संदर्भ है, यह वाक्यांश 'अंतिम दिन' पूरी बाईबल में 8 बार आया है। 6 बार हम इस प्रकार के कथन पढ़ते है, ''मैं उसे अंतिम दिन जिला उठाऊंगा'' या ''वह अंतिम दिन में उसका न्याय करेगा'', इत्यादि और यहाँ अंतिम दिन का तात्पर्य पृथ्वी के अस्तित्व के अंतिम दिन से है। दो बार यह वाक्यांश 'झोंपड़ियों के पर्व' के संबंध में है, और परमेश्वर 'झोंपड़ियों के पर्व' के अंतिम दिन का संबंध संसार के अंत के साथ जोड़ते है, ताकि यह घटना परमेश्वर द्वारा स्थापित तीसरे और अंतिम पर्व को आत्मिक रूप में पूरा करे। उसने सभी इस्राएली पुरूषों को आज्ञा दी थी कि वर्ष में तीन बार उसके सम्मुख एक स्थान में उपस्थित हो, जिसे वह चुन लेगा। 1 फसह का पर्व, 2

पेंटिकुस्त (प्रथम फलों) का पर्व, 3 झोंपड़ियों (बटोरन) का पर्व। हम इस विषय पर पहले चर्चा कर चुके है और जानते हैं कि आत्मिक रूप में फसह का पर्व सन् 33 में, फसह के दिनों में पूरा हुआ जब परमेश्वर के मेम्ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। हम यह भी जानते है कि पेंटिकुस्त के पर्व को प्रेरितों के काम, अध्याय 2 में आत्मिक रूप में सन् 33 में पेंटिकुस्त के समय पूरा किया गया, जब पवित्र आत्मा उण्डेला गया और प्रथम फलों का इकट्ठा किया जाना आरम्भ हुआ (ये वे है जिन्हें कलीसियाई युग में उद्धार दिया गया)। तब केवल तीसरा पर्व बचा जिसका आत्मिक रूप में पूरा होना बाकी है, और यह 'अंतिम दिन' अर्थात् संसार के अंत से पहले नहीं होगा। यही एक कारण है कि क्यों 7 अक्तुबर 2015 वह तीथि है जब परमेश्वर न्याय को पूरा करता है और यह सम्पूर्ण न्याय का 10,000 वा दिन भी है। यह झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन आत्मिक रीति से पूरा होगा और यही वह दिन है जब संसार का नाश होगा या संसार लोप हो जाएगा, और तब परमेश्वर एक नये आकाश और एक नयी पृथ्वी का सृजन करेंगे। और हम प्रकाशित वाक्य के 21 अध्याय में जो पढ़ते है यह उससे मेल खायेगा।

परन्तु इस संदर्भ में परमेश्वर 'प्यास बुझाने' की बात कैसे कर सकते है? वे कहते है, ''मैं प्यासे को जीवन के जल में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।'' इस बात का नये आकाश और नयी पृथ्वी से क्या संबंध है? क्या इसका संबंध एक पापी से नहीं होना चाहिये जो अब तक पाप में है और उद्धार की अभिलाषा रखता है? जी हाँ, एक मायने में ऐसा है, परन्तु यही सब कुछ नहीं जो बाईबल प्यास के संबंध में या 'प्यासों' के संबंध में कहना चाहती है। स्मरण रखें कि भजन संहिता 42:1–2 में क्या लिखा है :

जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हांफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हांफता हूं। जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा?

यहाँ हम एक आत्मा की अभिलाषा के विषय में पढ़ते है। यह उस आत्मा की अभिलाषा है जिसका नया जन्म हो चुका है, और उसमें एक नया आत्मा है जो परमेश्वर ने उद्धार पाने वाले व्यक्ति को दिया है। यह अभिलाषा अनवरत या लगातार बनी रहती है कि न केवल परमेश्वर की इच्छा पूरी करे, पर स्वयं परमेश्वर की लालसा करे कि परमेश्वर के सामने जाकर उपस्थित हो।

आप जानते है कि यही मूल दशा सृष्टि के आरम्भ के समय में थी। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप की समानता में सृजा कि वह उसके संगती में रहे। परमेश्वर उन वृक्षों के बीच उनके साथ चले–फिरे। लेकिन यह तभी तक हुआ, जब तक आदम ने पाप न किया था, उसके बाद वह परमेश्वर की उपस्थिति से बचने छिप गया, और तब से यही स्थिति

बनी हुई है। मनुष्य परमेश्वर से भागते आ रहा है, और अंधकार में छिप रहा है। मनुष्य ज्योति में नहीं रह सकता – पाप की दशा में यह हमारे लिये असह्य है। परन्तु जब परमेश्वर किसी पापी का उद्धार करते है, तब मूल संबंध पुर्नस्थापित किये जाते हैं और तब परमेश्वर के साथ रहने की अभिलाषा होती है। यही कारण है कि परमेश्वर की संतान बाईबल पढ़ती और प्रार्थना में परमेश्वर के साथ एकांत में समय व्यतीत करती है। क्योंकि हम परमेश्वर के साथ रहना चाहते है और भली आशा के साथ उस समय की प्रतीक्षा करते है जब सब बातों के पूरे होने का समय आयेगा, और उस दिन की ओर देखते है जब हम परमेश्वर के साथ रह सकेंगे और वह नये आकाश और नयी पृथ्वी में हमारे साथ निवास करेंगे।

मत्ती 5:5 के पहाडी उपदेश में लिखा है :

धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

'नम्र' वे हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया और वे प्रतिज्ञाओं के वारिस है। प्रतिज्ञा यह थी कि वे उस अनंतकालीन मीरास के देश में पृथ्वी के अधिकारी होंगे, जैसा परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से कहा था। यदि हम उद्धार पा चुके हैं, हम मसीह में वे आत्मिक बीज है, और यह प्रतिज्ञा हम से है, इस कारण, हम पृथ्वी के अधिकारी है।

तब ध्यान दे कि परमेश्वर आगे मत्ती 5:6 में क्या कहते है :

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

परमेश्वर अपने लोगों से कह रहे है। धन्य है वे जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया और अनंत जीवन का वरदान दिया, और वे लोग "धार्मिकता के भूखे–प्यासे" होंगे, यही कारण है कि मसीह ने कहा था, उनकी देह वास्तव में खाने की वस्तु है और उनका लोहू वास्तव में पीने की वस्तु है। बाईबल भी हमें यह बताती है मसीह ही धार्मिकता है। वह अपने व्यक्तित्व में धार्मिकता का मूर्तरूप है, और उसकी धार्मिकता से बहुत से लोग धर्मी बनाये गये। ये वे लोग है जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार देने का निश्चय किया और मसीह की धार्मिकता उन्हें पहिना दी। हम धर्मी ठहराये गये।

परमेश्वर ने पापियों के जीवन में एक अभिलाषा (भूख–प्यास) दी ताकि वे उद्धार के दिन में परमेश्वर की ओर खींचे जाये जबकि परमेश्वर उद्धार के दिन में (पापियों) लोगों को उद्धार देने का कार्य तब तक कर रहे थे। संभव है कि एक चुना हुआ व्यक्ति है जिसे जगत की उत्पत्ति से पूर्व चुना गया और इसलिये परमेश्वर ने उसे उद्धार देने के लिये स्वयं को बाध्य किया। समय आने पर वह व्यक्ति जन्मा, पर उसने अब तक उद्धार नहीं पाया है, और उस

पापी के जीवन के किसी मोड़ पर परमेश्वर उसे अपनी ओर या अपने वचन की ओर खींचने लगे, ये दोनों बातें एक समान ही है। परन्तु वह व्यक्ति तब भी पापों में था, परन्तु उसका मन बाईबल की ओर खिंच रहा था, और उन्होने उसमें परमेश्वर की पवित्रता के सिद्ध मानक स्तर को देखा, और यह देखा कि वे कितने अधिक असफल हुये है। वे मसीह के बारे में जाना कि वह कैसे व्यवस्था का अंत है, और वे उसकी धार्मिकता के बारे में जान गए कि कैसे केवल मसीह के द्वारा उनके पाप क्षमा किये जा सकते है। वे मसीह की या उसकी धार्मिकता की अभिलाषा करने लगे या उसकी भूख–प्यास रखने लगे। पर यह उद्धार के दिन हुआ होगा, परन्तु उन्हें परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के लोगों से प्रोत्साहन मिला होगा कि वे प्रभु के पास जाये और उसकी खोज करे जब तक की वह मिल सकता है। उन्होंने दया के लिये पुकारा होगा, क्यों? क्योंकि वे यह चाहते थे और ''वे धार्मिकता के भूखे–प्यासे थे।'' उन्होंने जान लिया कि वे परमेश्वर की दृष्टि में सही नहीं है, इस कारण वे परमेश्वर से धार्मिकता के लिये याचना कर रहे थे।

इस प्रकार यह सही है कि परमेश्वर के लोग जब उद्धार की खोज में थे, उनमें धार्मिकता की भूख और प्यास थी पर बात यहाँ समाप्त नहीं हुई। एक बार जब आप उद्धार पा लेते हैं, तब भी परमेश्वर और उन की धार्मिकता की भूख और प्यास समाप्त नहीं होती। प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर की प्रेरणा पाकर रोमियों 7:19–24 में यह लिखा है :

क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं। परन्तु यदि मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं। परन्तु मुझे अपने अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?

भाषा पर ध्यान दे। पौलुस ने परमेश्वर की प्रेरणा से उस संघर्ष के विषय में लिखा है जो परमेश्वर से उद्धार पा चुके लोगों के जीवन में रहता है क्योंकि परमेश्वर ने उस व्यक्ति को आत्मा के स्तर पर उद्धार दिया किन्तु उसकी देह अब भी उसी दशा में है जैसी उद्धार न पाने की दशा में थी। इस प्रकार 'आत्मा' में धार्मिकता है, और एक नये हृदय और नयी आत्मा के द्वारा उसे सिद्ध बनाया गया है जबकि शरीर अशुद्ध और पापमय है। आत्मा की अभिलाषा है कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करे, पर शरीर की अभिलाषा पाप करने की है, इस कारण संघर्ष है। परिणामस्वरूप, एक अन्य इच्छा जन्म लेती है। उद्धार के दिन

परमेश्वर के पास जाकर एक पापी पुकार सकता है, ''हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर!'' उसके मन में उसकी आत्मा के उद्धार का विचार था और यदि वह परमेश्वर के चुने हुओं में से एक था, परमेश्वर ने उसे समय आने पर उद्धार दिया होगा। उद्धार के बाद, रोमियों अध्याय 7 में पौलुस के द्वारा वर्णित संघर्ष का प्रारम्भ होता है और परमेश्वर की संतान के देह में रहने के सम्पूर्ण जीवन भर बना रहता है। सच्चे विश्वासियों को और अधिक चाहने की अगुवाई मिलती है। वह कृतज्ञ है कि परमेश्वर ने उसकी आत्मा को उद्धार दिया, परंतु अब वह अपने सम्पूर्ण उद्धार की अभिलाषा करता है। वह अभिलाषा करता है कि उसकी देह का रूपान्तर हो जाये और शारीरिक देह से छुटकारा पाये क्योंकि देह पापमय है। जिस प्रकार परमेश्वर व्यक्ति में उद्धार पाने की अभिलाषा देते हैं, वैसे ही वे उसमें उसके उद्धार के कार्य को पूरा करने की अभिलाषा भी देते है। परमेश्वर ने जो भला काम आरम्भ किया है, वह अंतिम दिन में यीशु मसीह के आने पर पूर्ण रूप में सम्पन्न होगा। परमेश्वर जितनों का उद्धार करेंगे, उन सबको नयी आत्मिक देह, दी जायेगी। पर परमेश्वर की संतानें उनकी देहों के छुटकारे के लिये अधिक लालसा और पुकारना सीखती हैं।

रोमियों 8:22–23 में जो लिखा है उस पर ध्यान दे :

क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है.....

दूसरे शब्दों में, जब लिखा है, 'आत्मा के पहले फल', तब इसका अर्थ है कि हम पहले ही उद्धार पा चुके लोग है, परन्तु रोमियों 8:23 में आगे यह लिखा है :

.....आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।

हमारी देहों के छुटकारे के लिये एक 'कराहना' और 'लालसा' है : ''मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ायेगा?'' परमेश्वर के लोग आंशिक उद्धार से संतुष्ट नहीं है। वे सम्पूर्ण छुटकारा चाहते है और सिद्ध रूप में उद्धार चाहते है आत्मा में और शरीर दोनों में। यहाँ तक कि स्वर्ग में पवित्रजन भी यही लालसा करते है, परमेश्वर हमें उनकी एक झलक, वेदी के नीचे की आत्माओं के रूप में दर्शाते है, वे आत्मायें कह रही है, ''हे स्वामी, हे पवित्र और सत्य, तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लहू का बदला कब तक न लेगा? यह पुकार है कि कितनी देर लगेगी, न्याय कब पूरा होगा, क्योंकि न्याय के पूरा होने पर वे उनकी पुनरूत्थान प्राप्त देहों को प्राप्त करेंगे। उनमें एक अनवरत अभिलाषा है कि वे 'अविनाशी' वस्त्रों को पहन ले, जैसा कि 2 कुरिन्थियों 5:1–4 में वर्णन है :

क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है। इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें। कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।

क्या आप इन पवित्रशास्त्र के वचनों में परमेश्वर के लोगों की तीव्र और दृढ़ इच्छा को देख रहे है? यह हमारी देहों के लिये धार्मिकता की भूख और प्यास है – हम चाहते हैं कि हमारी देह धार्मिकता प्राप्त करे और हम उसे एक अनंतकालीन धार्मिकतायुक्त सृष्टि में चाहते है। हम इस भ्रष्ट संसार जैसे स्थान में नहीं रहना चाहते। हम चाहते हैं कि सब कुछ धार्मिकता बन जाये। हम चाहते है कि सब कुछ अंतिम रूप में शुद्ध और पवित्र बनाया जाये।

आइये, हम 2 पतरस, अध्याय 3 में पढ़ें, जहाँ परमेश्वर इस संसार के विनाश एवं नयी पृथ्वी की प्रतिज्ञा के विषय में कहते है। 2 पतरस 3:12–13 में यह लिखा है :

और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे। पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी॥

पहाडि उपदेश के अनुसार धन्य लोग किसकी खोज करते है? मत्ती 5:6 में लिखा है :

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

परमेश्वर कहते हैं कि नये आकाश और नयी पृथ्वी मे धार्मिकता वास करती है। वहाँ मसीह है जो धार्मिकता है, और साथ ही वहाँ पाप रहित सिद्धता है, वहाँ कोई पाप नहीं और न कोई मृत्यु है, क्योंकि सभी बातों को धार्मिकता बना दिया गया है। यही कारण है कि परमेश्वर कहते है – "मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।"

यहाँ कुछ है जो मेरे विचार से सत्य है, पर मेरे पास जानने का कोई तरीका नहीं है कि क्या यह परमेश्वर के सभी लागों के लिये सत्य है, पर मैं जानता हूँ कि यह मेरे और कुछ अन्य लोगों के लिये सत्य है, जिन्हें मैं जानता हूँ कि उन्होंने ऐसी अभिलाषा अभिव्यक्त की है। 21 मई 2011 से जब हम न्याय के दिन के इस दिर्घकालिन समय में आए है, परमेश्वर के लोग इस संसार से कूच करने और प्रभु के पास जाने की अभिलाषा करते आ रहे हैं

और अभिव्यक्त भी करते आये है। वे अपनी इस अभिलाषा को व्यक्त करते आये है कि इस संसार का अंत हो, परन्तु यह बात वे किसी अन्य कारणवश नहीं चाहते, परन्तु इस संसार में पाप के बढ़ने और दुष्टता के बढ़ते जाने के कारण जो अनिच्छा, दबाव और थकान है उसके कारण वे चाहते है, और हमारी शारीरिक देहों की दशा के कारण जो 21 मई 2011 के बाद इस बुरे संसार में रहते हुये हो रही है।

यह शायद इसलिए है क्योंकि हमें लगा कि 21 मई 2011 को हम अपने घर अर्थात स्वर्ग में जाएँगे। हमें लगा कि यह स्वर्ग में उठाए जाने का दिन और वह दिन होगा जब हमें नई पुनरूत्थान प्राप्त देह मिलेगी। परमेश्वर के लोगों ने उस समय की अपेक्षा की, किन्तु हम निराश हुए, पर परमेश्वर की कुछ और ही योजना थी। उसकी योजना यह थी कि वह अपने लोगों को परखें और न्यायदिन के दन 1600 दिनों के विषय में हमने बाईबल से कई बातों को सीखा है। तौभी, अब भी यह लालसा है जो कभी नही जाएगी और यह दृढ प्यास और अभिलाषा है कि हम परमेश्वर की उपस्थिती में जाए और अपने आप को नए आकाश और नई पृथ्वी में पाए जहाँ धार्मिकता निवास करती है।

यह इसलिये होता यह है कि परमेश्वर हमारे अन्दर प्यास को उस काल में उत्पन्न करते है, जब वे संसार का अंत करेंगे, और उस समय वे उस नयी सृष्टि को लाएंगे, और जब वे अपनी दुल्हिन को लायेंगे, विश्वासियों की देह, और वे सब के सब शरीर और आत्मा में नये बना दिये गये प्राणी है। ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।'' अब आप सदा–सर्वदा उस धार्मिकता से पी सकते है। अब आप उस धर्मी (मसीह) के विषय में अनंत भविष्यकाल में सदा–सर्वदा सीख सकते है। अब धार्मिकता का वास आपके बीच में है और जितना चाहे उतनी धार्मिकता निःशुल्क ले सकते है। यही बात परमेश्वर कह रहे हैं, और यह आश्चर्य से कम नहीं है कि झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन में इस प्रकार की भाषा का उपयोग हुआ है जैसा कि यूहन्ना 7:37 में है। मसीह वह नहीं कर रहे हैं जैसा कुछ लोग सोचते है, वे पापियों को आमंत्रित नहीं कर रहे हैं जो अब तक पाप में है, और न उन्हें उनके पापों से शुद्ध होने का आमंत्रण दे रहे है। वे उनसे बात नहीं कर रहे हैं जिनको उद्धार का कभी अनुभव नहीं हुआ, पर वे उन से बात कर रहे हैं जिन्हें आंशिक रूप में उद्धार मिल चुका है। ये वे लोग है जिन्होंने उनकी आत्माओं में उद्धार का अनुभव पाया है और प्रथम पुनरूत्थान का अनुभव प्राप्त कर चुके हैं। ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।'' आपकी देहों के उद्धार के साथ–साथ आपका उद्धार सम्पूर्ण और पूरा हो जाता है।